RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-04
April-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

हिन्दी नुक्कड़ नाटकों में चित्रित धार्मिक समस्याएँ

डॉ प्रवीन कुमार

सहायक प्राध्यापक, चंदू राम सुथार मेमोरियल कॉलेज हनुमानगढ़

1.धर्म : अर्थ, स्वरूप एवं परिभाषा :

धर्म : अर्थ और परिभाषा :

हमारे धार्मिक ग्रंथ महाभारत में कहा गया है कि धारण करने के कारण धर्म, धर्म कहलाता है। धर्म प्रजा को धारण करता है जो धारण शक्ति से युक्त है, वही धर्म है, इसे निश्चय समझो।[1]

धर्म के विषय में भारतीय धर्माचार्यों ने धर्म को अनेक परिभाषाओं में परिभाषित किया है। यास्क ने 'निरुक्तम्' में 'धर्म' का पर्यायवाची 'नियम' बताया है। धर्म वह नियम है जो आत्मा को ऊपर उठाकर परमात्मा के साथ सारूप्य स्थापित करने का मार्ग बतलाये हैं व मानव–गुणों को अक्षुण्ण रखते हुए उसे मोक्षत्व की ओर ले जाते हैं। महर्षि कणाद ने कहा है जिसके द्वारा लौकिक सुख और अंतिम लक्ष्य की सिद्धि हो सके, वही धर्म है।[2]

विभिन्न शब्दकोशां में 'धर्म' शब्द को इस प्रकार व्याख्यायित किया गया है– पौराणिक कोश में धर्म को देवता मानते हुए कह गया है कि धर्म एक ऐसे देवता हैं, जिसकी उत्पत्ति ब्रह्म के दक्षिण अंग से हुई है। ब्रह्म की आज्ञानुसार इन्हें चार पैरों वाले वृषभ के आकार का होने के कारण सबसे प्रधान होकर प्रजा पालन का भार मिला है। धर्म सतगुरु में चार पैरों से, त्रेता युग में तीन पैरों से, द्वापर युग में दो पैरों से और कलियुग में सत्यरूपी एक पैर से प्रजा की रक्षा करता है। तपस्या शुद्धता तथा दया इसके तीन पैर हैं पर ये कलियुग में समाज हो जाते हैं।[3]

हिन्दी शब्दकोश में 'धर्म' को ईश्वरीय श्रद्धा, पूजा–पाठ तथा लौकिक व सामाजिक कर्त्तव्यों से जोड़ा गया है।[4] दी ऑक्सफोर्ड हिन्दी इंग्लिश डिक्शनरी में 'धर्म' शब्द के विभिन्न अर्थ देते हुए कहा है कि धर्म ऐसी भावना है जिसे मानव द्वारा अपनाया जा सके, एक ऐसा धार्मिक व सामाजिक कार्यकलाप जिसके द्वारा पूरा करने की अपेक्षा एक सच्चे हिन्दू से की जा सके, एक उचित कार्य कर्त्तव्य, नैतिकता, गुण या संस्कार, सुसंस्कृत जीवन–न्याय।[5]

पौराणिक सन्दर्भ कोश में धर्म के विभिन्न अर्थ इस प्रकार दिए गए हैं– अभ्युदय और निःश्रेय का साधन भूतवेद विहित कर्म (जैसे–यज्ञ), एक प्रकार का अदृष्ट जिसमें स्वर्ग की प्राप्ति होती है, लौकिक, सामाजिक कर्त्तव्य, वह कर्म जिसे वर्णआश्रम जाति आदि की दृष्टि से करना आवश्यक हो।[6]

संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ के अनुसार जिसके करने वाले का इस लोक में अभ्युदय हो और परलोक में मोक्ष की प्राप्ति हो, धर्म है– "धरति लोकान् इति धर्मः"[7]

इस प्रकार विभिन्न शब्दकोशों द्वारा धर्म के अर्थ बताए गए हैं जो मनुष्य को उनके कर्त्तव्यों और नियमों का पालन करते हुए समाज कल्याण की भावना पर बल देते हैं। शब्दकोशों के अतिरिक्त विभिन्न विद्वानों ने भी धर्म की परिभाषाएँ अपने–अपने मतानुसार की है जो निम्नलिखित है– आग्बर्न और निमकोफ के धर्म सम्बन्धी विचारों की विद्याभूषण, डॉ. डी.आर. सचदेव पुष्टि करते हुए कहते हैं कि "धर्म अति मानवीय शक्तियों के प्रति मनोवृत्ति है।"[8] इसी प्रकार सर जेम्स फ्रेजर धर्म को मानव से श्रेष्ठ उन शक्तियों की सन्तुष्टि या आराधना मानते हैं जिनके सम्बन्ध में यह विश्वास किया जाता है कि वे प्रकृति और मानव जाति को मार्ग दिखाती हैं।[9] आर्नलु ग्रीन धर्म को विश्वास अति प्राकृतिक शक्तियों से जोड़ते हुए कहते हैं– "धर्म ऐसे विश्वासों की प्रतीकात्मक क्रियाओं एवं वस्तुओं की प्रणाली है जो ज्ञान की अपेक्षा विश्वास द्वारा शासित होती है और जो मनुष्य को अनदेखी एवं नियन्त्रण क्षेत्र से दूर अति प्राकृतिक शक्ति के रूप में सम्बद्ध कर देती है।"[10]

इस प्रकार विभिन्न शब्दकोशों और विद्वानों के धर्म सम्बन्धी विचारों को जानने के बाद यह कहा जा सकता है कि धर्म मानव की एक ऐसी अद्भुत शक्ति जो मानव को परोपकार, दया, नैतिकता आदि गुणों से भरपूर करते हुए कर्त्तव्यों का पालन करना तथा मानव कल्याण की ओर अग्रसर करता है।

धर्म : स्वरूप :

धर्म वर्षों से चला आ रहा है और आधुनिक समय में भी व्यक्ति अनेक धर्मों में अपनी इच्छानुसार लिप्त है, जिसके कारण इसके स्वरूप में परिवर्तन होना स्वाभाविक ही है। धर्मविहीन व्यक्ति की आलोचना जगह–जगह होती पाई गई है। संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ में कहा गया है कि धर्म एक प्रकार से हमारा आदर्श गुरु है। यदि हम विजयी है तो हमारा हाथ पकड़ने वाला कोई नहीं, किन्तु यदि हम उच्छृंखल हैं और गड्ढे में गिरने को तैयार हैं तो धर्म के अतिरिक्त हमें बचाने वाला कोई नहीं, धर्म हमें पतित नहीं होने देता। इसलिए जब धर्म साहित्य के भीतर प्रतिष्ठित किया जाता है तो वह साहित्य को भी ऊँचा उठाता है, साहित्य में धर्म आदिकाल तक रहा है और अन्तकाल तक रहेगा।"[11]

डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार– "धर्म का उद्देश्य चिन्तन या भाव समाधि नहीं है, अपितु जीने की धारा के साथ एकात्मय स्थापित करना और उनके लिए सृजनात्मक प्रगति में भाग लेना है। धर्मपरायण मनुष्य उसके ऊपर उसकी भौतिक प्रकृति या

RRIJM 2015, All Rights Reserved

सामाजिक दशाओं द्वारा थोपी गई मर्यादाओं से ऊपर उठ जाता है और सृजनात्मक उद्देश्य को विशालतर बनाता है। धर्म एक गतवर (गत्यात्मक) प्रक्रिया है, सृजनशील तीव्र मनोवेग के नये प्रयास जो असाधारण व्यक्तियों के माध्यम से कार्य करता है और जो मानव–जाति को एक नये स्तर तक उठाने के लिए प्रयत्नशील है।[12]

आचरण के रूपों को जब व्यक्तियों ने स्वेच्छा से स्वीकार नहीं किया तो उनका संबंध इहलौकिक जीवन के साथ–साथ परलौकिक से भी जोड़ दिया गया। क्योंकि मनुष्य के पास कोई ऐसी शक्ति नहीं थी कि प्रत्येक व्यक्ति को एक ही मार्ग पर चला सके। लोभ और भय जनजीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं, अतः स्वर्ग का लोभ और अनिष्ट का भय दोनों ही मानव को धर्म की ओर प्रेरित करते रहे।"[13]

मानव अपने चाहे वह उसका वर्तमान हो या भविष्य दोनों को ही सुखपूर्वक व्यतीत करना चाहता है। कुछ नियम व धर्म ऐसे होते हैं जो हमें धर्म से प्राप्त होते हैं और उन्हें पूरा करने से मन में शांति स्वतः प्राप्त हो जाती है। कुछ ऐसे कार्य होते हैं, जैसे जगह–जगह पथिकों के लिए प्याऊ लगवाना, अनाथ बच्चों के लिए अनाथालय की सुविधा प्रदान करना इत्यादि जो दिखाई देने में सामाजिक कार्य लगते हैं, कहीं–न–कहीं ये धार्मिक कार्यों में होते हैं, जिसे करके मानव सुख शांति महसूस करता है।
वर्तमान में धर्म के नाम पर पाखंड, आडम्बरों का बोलबाला अधिक दिखाई पड़ रहा है। आज धर्म के नाम पर मानव की आस्था को चोट पहुँच रही है। पाखंडियों द्वारा धर्म के नाम पर जनकल्याण न कर जनता का अत्यधिक शोषण किया जा रहा है।

2. नुक्कड़ नाट्य वस्तु : धार्मिक साम्प्रदायिक समस्याओं के सन्दर्भ में :

स्वातंत्र्योत्तर धार्मिक परिदृश्य :

भारत के लोग पुराण काल से लेकर धर्म में आस्था रखने वाले हैं। स्वातंत्र्योत्तर परिवेश में आकर धर्म के मूल्यों में कुछ परिवर्तन तो आ गया। पहले धर्म में जो कट्टरवादिता थी उसकी तो धीरे–धीरे नाश होने लगा। पुराने जमाने में अछूतों को देखना तक पाप माना जाता था, लेकिन आजकल 'हरिजन' कहे जाने वाले इन्हीं लोगों को ऊपर उठाने का प्रयास चल रहा है।

स्वातंत्र्योत्तर युग में धर्म से जुड़े व्यक्तियों तथा धार्मिक संस्थाओं का अधिक प्रचलन हो रहे हैं। इसका एक कारण तो यह रहा है कि राजनीतिज्ञ धार्मिक संस्थाओं को अपनी उन्नति की सीढ़ी मानते हैं। एक विशेष राजनीतिक पार्टी में विश्वास करने वाले लोग एक विशेष धर्म के होंगे तो इन्हीं राजनीतिज्ञों को अधिक वोट मिलेगा। इसलिए सत्ता हमेशा धर्म के पक्षधर रहेगी।

स्वातंत्र्योत्तर भारत में धर्म के नाम पर बहुत अधिक हल्ला मचाया गया था। मुस्लिम बहुलता वाले प्रदेशों क्षेत्रों को उनकी माँग के अनुसार पाकिस्तान घोषित कर दिया गया। धर्म के नाम पर भारत–माता को विभाजित किया गया। हिन्दुस्तान–पाकिस्तान विभाजन के फलस्वरूप भारत में साम्प्रदायिक दंगे शुरू हुए। अनेक लोगों की हत्याएँ हुई। भारत माता की वीर–भूमि में जहाँ भारतीय एकजुट होकर आजादी के लिए लड़े वहाँ स्वतंत्रता मिलने के बाद वे स्वयं धर्म के नाम पर आपस में हत्या कांड करने लगे।

भारत में हिन्दू–मुस्लिम साम्प्रदायिक दंगे भड़के। इन दंगों पर काबू पाने का पूरा प्रयास तत्कालीन सरकार और गाँधी जी की ओर से हुआ, लेकिन वे सारे प्रयास असफल रहे। 26 जनवरी 1950 को जब भारतीय संविधान लागू हुआ तब से ही भारत को धर्म निरपेक्ष राज्य का दर्जा हासिल हुआ और हर भारतीय नागरिक को धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार मिला।इसके बाद भारतीय धार्मिक परिवेश में पूरा बदलाव आ गया। धर्म में व्याप्त अंधविश्वासों, छुआछूत आदि को दूर करने की प्रवृत्तियाँ शुरू हुई। हरिजनों को धार्मिक और सामाजिक, सार्वजनिक स्थानों में प्रवेश दिलाने का कार्य समाज सुधारक संस्थाओं द्वारा किया गया।

इस क्षेत्र में हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का योगदान सराहनीय है। वे हरिजन समस्याओं के निदान के लिए व्यक्तिगत रूप से हरिजन समाज से जुड़े। ब्रह्म समाज, आर्यसमाज जैसे सामाजिक संघों ने धार्मिक क्षेत्र में व्याप्त कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फेंकने की दिशा में सराहनीय कदम उठाए। राजा राममोहन राय, दयानन्द सरस्वती जैसे समाज सुधारकों ने धार्मिक क्षेत्र में व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अधिक महत्त्व देकर धर्म को नवीन सामाजिक आवश्यकताओं के अनुसार ढालने की बातों पर जोर दिया। इतना सब कुछ होने पर भी भारत विभाजन के समय भारत में साम्प्रदायिकता का जो बीजवपन हुआ था वह आज अधिक जोर पकड़ रहा है। समय–समय पर धर्म के नाम पर साम्प्रदायिकता को उकसाया जाता रहा है। इसी के फलस्वरूप देश के भिन्न–भिन्न भागों में साम्प्रदायिक दंगे, बम्ब स्फोटन आदि हो रहे हैं। कभी–कभी तो भौतिक या आर्थिक कारणों से होने वाले झगड़ों को भी साम्प्रदायिकता का जामा पहनाने की कोशिश भी जारी है जिसके पीछे राजनीतिज्ञों की कूटनीति ही है।

भारत में बाबरी मस्जिद तथा अयोध्या के नाम पर चल रही बातें साम्प्रदायिक तनाव की जीती जागती सबूत है। उसी प्रकार मुम्बई, दिल्ली, हैदराबाद जैसे महानगर कितने बार आतंकवादियों, साम्प्रदायिक दंगे आदि के शिकार हो गए हैं? कितने मानव जीवन इसके लिए नष्ट हो गए हैं। साम्प्रदायिकता के कारण देश मानवीय अस्तित्व की दृष्टि से भी एक गहरे संकट से गुजर रहा है। शासक, धर्म तथा साम्प्रदायिकता का इस्तेमाल करके जनता का शोषण करते हैं। जनता पर होने वाले धार्मिक शोषणों का चित्रण नुक्कड़ नाटकों में हुआ है।

नुक्कड़ नाटक अंधविश्वासों, धार्मिक रूढ़ियों, पाखंडों से जनता को अवगत कराते हुए इनके सबके उन्मूलन के लिए आह्वान देते हैं। समाज में धार्मिक सांस्कृतिक तनावों से पनपने वाली कुरीतियों पर तीखा व्यंग्य करते हुए एक स्वस्थ समाज का निर्माण करने के लिए जनता को तैयार करने का प्रयास नुक्कड़ नाटककारों द्वारा जारी है।

आज धर्म तथा शासन के बीच एक विशेष प्रकार का गठबंधन है जिसके बल पर वे आम जनता के शोषण करते हैं। इस समस्या का चित्रण जन नाट्यमंच के नुक्कड़ नाटक 'काला कानून' में हुआ है। इस नुक्कड़ नाटक में रानी नामक एक चरित्र की प्रस्तुति हुई है वह तो आज की धार्मिक सत्ता का प्रतीक है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

रानी पूँजीपतियों तथा राजनीतिज्ञों के पक्षधर हैं। वह जनता को महामूर्ख मानती है, क्योंकि जनता से कुछ भी कहे, बिना सोचे उसे स्वीकारती है।

'काला कानून' में धार्मिक सत्ता की विनाशकारी शक्ति का चित्रण है। नाटक में कहा गया है कि देवीजी की मर्जी के बगैर पत्ता भी नहीं खड़केगा। यहाँ धर्म सत्ता की शक्ति कितनी है यह तो दृष्टव्य है। रानी को उद्योगपतियों, अफसरों–सेठों और जमींदारों की प्रिय मित्र कहा गया है। अर्थात् धर्म सत्ता इन्हीं लोगों की मित्र है आम–आदमी की नहीं।

रानी : "हम ने अवतार लिया है इस देश की दीन हीनजनता, अर्थात् मजदूर–धर्म से पीड़ित लखपतियों और करोड़पतियों के उद्धार के लिए।"[14]

पूँजीपति लोग पैसा देकर अपनी सहायता के लिए धर्म सत्ता का इस्तेमाल करते हैं। धर्म सत्ता के आगे नतमस्तक होने वाले पूँजीपति की विनती है–"हे रानी तेरी सेवा में यह काली गठरी रखते हैं। हम सबकी श्रद्धा का तोहफा हमह पेश तुझे यह करते हैं। इस गठरी में है गुप्त अस्त्र जादू टोने और जाप तंत्र। धन्ना सेठों के प्रेम पत्र जिनसे चलता है प्रजातंत्र।"[15]

अपने हथियारों को छुपाने की जगह के रूप में ये पूँजीपति लोग धार्मिक संस्थाओं को ही चुनते हैं क्योंकि वह जगह सुरक्षित है। वहाँ पर कोई हमला नहीं होगा क्योंकि धर्म तथा धार्मिक संस्थाओं से जनता को आदर है। पुलिस वाले भी प्रवेश नहीं करेंगे। लेकिन इन धार्मिक केन्द्रों में चलने वाले अनाचारों से आम जनता अनभिज्ञ है। यही इन्हीं शोषकों की शक्ति है।

रानी के महल में आम आदमी को प्रवेश नहीं दिया जाता है। रानी को देखने का अधिकार समाज के उच्च वर्गीय लोगों को ही दिया जाता है। जनता रानी जी से मिलने के लिए जाती है तो रानी जी का चमचा उन्हें रोकता है।

चमचा : "यह रानी जी का महल है, यहाँ पढ़े लिखे ऊँचे खानदानी लोग ही जा सकते हैं, तुम्हारे जैसे उजड्ड नहीं।"[16]

रानी के अत्याचार से अनभिज्ञ होने के कारण जनता उसकी शरण में जाती है। रानी जी तब जनता को ठीक रास्ते पर लाने की दृष्टि रखकर उनसे कहते हैं कि वे हड़ताल करना बन्द कर दें। यहाँ पानी जी जनता को प्रतिक्रिया विहीन बनाना चाहती है। उन्हें मालूम है कि जनता उसकी बात जरूर मान लेंगी क्योकि गरीब जनता धर्म में अधिक विश्वास रखती है। जनता की इसी कमजोरी से लाभ उठाना रानी जी का लक्ष्य है। इसके लिए शासक वर्ग की सहमति भी है। जनता को स्वार्थ से दूर भड़काते हुए रानी उपदेश देती है–"आज जरूरत है अनुशासन और कठोर परिश्रम की, आंदोलनों की नहीं। देश के कदम मजबूत कीजिए फिर आपकी मांगों पर विचार होगा।"[17]

यहाँ रानी जनता को हड़ताल बन्द करने का आह्वान देती है। यदि हड़तालें जारी रहेंगी तो कारखाने बन्द हो जाएंगे, जिससे पूँजीपतियों को नष्ट मिलेगा। लेकिन उनके कहने पर जनता नहीं मानती है तो रानी उस पर हमला छोड़ती है। पूँजीपतियों की रक्षा के लिए वह कुछ नीतियों को प्रस्तुत करती हैं।

चमचा : "आज से कर्मचारियों के बोनस पर रोक लगाई जाती है तथा वेतन जाम किया जाता है। .... किसी भी उद्योग में अपनी मांगों को लेकर इकट्ठा होना गैर कानूनी है।"[18]

धर्म के नाम पर जनता पर हमला करने की नीति आज भी मौजूद है जिसके विरुद्ध आम जनता पर प्रभाव डालने काप्रयास इस नुक्कड़ नाटक के माध्यम से हुआ है।

'छः पैसे का रुपया' नामक नुक्कड़ नाटक में एक ऐसे पंडित का चित्रण किया गया है जो मात्र पैसा कमाने के लिए ही पूजा करता है। जनता की भलाई नहीं अपनी स्वार्थ पूर्ति ही उनका लक्ष्य है। जब वह एक शादी की पूजा करता है तो अग्नि में डालने के बदले घी को अपनी दक्षिणा में डालने को कहता है।

पंडित : "वर और कन्या का मुँह मीठा करवाओ।"

पिता : मीटा तो कुछ है नहीं। वो आपकी दक्षिणा वाली चीनी में से करा दूँ।

पंडित : ना भैया न दूर से दिखा भर दीजिए काम चल जाएगा।"[19]

इस नुक्कड़ नाटक में चित्रित पंडित जो पूजा ठीक तरह से किए बिना अपनी ही आवश्यकताओं की पूर्ति करता है, धार्मिक शोषकों का उदाहरण है। शादी की पूजा ठीक तरह से हो जाए या नहीं इसकी उसे कोई परवाह नहीं है। घरवाले चाहे गरीब हों या अमीर उन्हें अपनी दक्षिणा सही मात्रा में मिलनी ही चाहिए। गरीब लोगों को इन्हीं पंडितों को दक्षिणा देने के लिए कठिन मेहनत करनी पड़ती है, क्योंकि इनकी दक्षिणा आम आदमी की पकड़ से भी ज्यादा है।

साम्प्रदायिक समस्याओं का चित्रण :

"भारत के सामाजिक सांस्कृतिक विकास और राष्ट्रीय एकता अखंडता में सबसे बड़ा बाधक तत्त्व साम्प्रदायिकता है। इसी समस्या के कारण देश मानवीय अस्तित्व की दृष्टि से भी एक गहरे संकट से गुजर रहा है।"[20] स्वाधीनता प्राप्ति के बाद साम्प्रदायिक सद्भाव और सभी धर्मों के प्रति आदर की भावना रखने वाली व्यवस्था को सत्ता द्वारा विस्थापित किया गया। पीछे यह उद्देश्य रहा कि जनता द्वारा देखे गए सपने, सपने ही रह जाएं, उसकी आशाएँ और आकांक्षाएँ मूर्त न हो पायें, उसके अधिकारों और उनके लिए उठने वाली आवाज़ को दबाया जाए।

आर्थिक संकट से जनता का ध्यान हटाने और जन असंतोष को गलत दिशा देने के लिए शासक वर्ग धार्मिक संकीर्णताओं को बढ़ावा देता है। शासक वर्ग की इस कूटनीति को चित्रित करते हुए धार्मिक साम्प्रदायिक सद्भावना स्थापित करने का प्रयास नुक्कड़ नाटकों में हुआ है।

रमेश उपाध्याय के नुक्कड़ नाटक 'राजा की रसोई' में साम्प्रदायिक समस्या तथा साम्प्रदायिकता की आड़ में अपनी स्वार्थ पूर्ति करने वाले शासकों का यथार्थ चित्रण है। नाटक का आरंभ ही नाट्य मंडली द्वारा आयोजित एक समूह गान से होता है जिसमें हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई धर्मों के लोग, उन धर्मों के साम्प्रदायिक रूप तथा उसके पीछे छिपी शक्तियों की सांकेतिक

चर्चा में लगे हुए हैं– "देखो–देखो रे भाई धरम करम की माया इसने भाई का भाई से कैसे गला कटवाया।"

इस नुक्कड़ नाटक में पहले राजा को धर्म–निरपेक्ष राजा के रूप में चित्रित किया है, लेकिन जब तक जनता अपने अधिकारों की बात नहीं कहती मात्र तब तक वह धर्म निरपेक्ष राजा बना रहता है। किन्तु जब उनके रसोइये अपने काम के लिए उचित वेतन, काम की जगह की स्थिति आदि पर शिकायत करते हैं तब उनके अधिकारों के दमन के लिए राजा उनके बीच धर्म के नाम पर फूट डालता है।

राजा : "... जीवन में सबसे बड़ी और सबसे प्यारी चीज है आदमी का धर्म। धर्म के लिए आदमी जान दे सकता है, दूसरे जान ले सकता है। .....हम सोचते हैं कि साम्प्रदायिक दंगों को राष्ट्रीय पर्व घोषित कर दे और उन दंगों में जो लोग सबसे ज्यादा जानें लेकर दिखाये उन्हें धर्मवीर चक्र प्रदान करें।"[21]

यहाँ एक ऐसे शासक का चित्रण हुआ है जो विद्रोह और जनक्रान्ति को धर्म के माध्यम से दबाना चाहता है। स्वयं वे कहते हैं कि वे जनता के रक्षक हैं। लेकिन वही रक्षक स्वार्थ पूर्ति के लिए धर्म की आड़ में जनता का शोषण करते हैं। शासक वर्ग की इसी प्रवृत्ति का चित्रण इस नुक्कड़ नाटक में हुआ है।

साम्प्रदायिकता को मुख्य विषय बनाकर लिखे गए नुक्कड़ नाटकों में धर्मांधता, अंधविश्वास, रूढ़ियों आदि का विरोध किया गया है। ऐसे नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से नाटककार यही बात सिद्ध करना चाहते हैं कि आम जनता जो है वह वास्तव में साम्प्रदायिकता सद्भाव ही चाहती है।

जनता के मन में धर्म के प्रति जो विशेष आस्था है उसे साम्प्रदायिकता की ओर मोड़ कर प्रत्येक धर्म के लोगों के बीच झगड़ा कराने की कोशिश शासक करते हैं। आज का जन प्रतिनिधि यानि शासक साम्प्रदायिकता की आग में घी डालने का कार्य करता है।

रमेश उपाध्याय के नुक्कड़ नाटक 'राजा की रसोई' में शासकों की इस बद–नीति का वास्तविक चित्रण है। सत्ता द्वारा पोषित दूषित न्याय–व्यवस्था सत्ता की यथास्थिति बनाए रखने के सर्वथा योग्य है। नाटक में गुलाम अली और मि. वेस्टर्न का अल्प संख्यकों का नेता होना, धर्मांतरण की बात करना, दंगों में सक्रिय होना, नेकरदास का हिन्दू नेता और किरपान सिंह का खालसा पंथ का नेता होना, छुआछूत जातिवाद को प्रमुखता देना इस बात की पुष्टि करता है। यह साम्प्रदायिक तत्त्व आम जनता को अधिकारों की लड़ाई लड़ने से रोकते हैं। नुक्कड़ नाटक का यह अंश देखिए–

"गुलाम : देखिए साहिबान, इन बेकार की बातों से कोई फायदा नहीं। बावर्चीखाने में रियासत की कोई बात नहीं होनी चाहिए। काम कीजिए और ठीक तरह से कीजिए। राजा साहब को आप लोगों से बहुत शिकायतें हैं।"[22]

इस नुक्कड़ नाटक में राजा द्वारा स्थापित नयी व्यवस्था जो अमानवीय है, समाज में बढ़ती उन साम्प्रदायिक शक्तियों का प्रतीक है जो आगे चलकर देश रूपी रसोई को संभालेगी। यह नाटक राष्ट्र की ही नहीं, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चल रही, धर्म की नीति का चित्रण करता है। ये शक्तियाँ मात्र विनाश या ध्वंस जानती है– आम जीवन की शांति नष्ट करती है, कहीं मस्जिद गिरवाती हैं तो कहीं मंदिर। इनकी काली करतूतों की शिकार के रूप में भारतमाई का चित्रण इस नुक्कड़ नाटक में लिया गया है जो प्रतीकात्मक है।

जन नाट्य मंच के प्रमुख रंगकर्मी सफदर हाशमी द्वारा लिखित नुक्कड़ नाटक 'अपहरण भाईचारे का' भी साम्प्रदायिकता को विषय बनाकर लिखा गया है। इसमें नाटककार मदारी जमूरे के खेल के माध्यम से देश में गहरे पैठी साम्प्रदायिकता की जड़ों को एक–एक कर उखाड़ता है। इस नुक्कड़ नाटक में चित्रित किया गया है कि जिस भाईचारे के कारण देश की जनता ने आजादी हासिल की थी, उसी भाईचारे का अपहरण आज के धार्मिक संगठनों और इनसे जुड़े लोगों ने कर लिया है। नाटक में चित्रित किया गया है कि देश में हिन्दू–मुस्लिम–सिख तीनों के लिए धार्मिक संगठन बन गए हैं। इनको बनाए रखने के लिए तथा धर्म के नाम पर दंगा भड़काने के लिए अमेरिका जैसे देशों से पैसा आता है या लाया जाता है।

इस नुक्कड़ नाटक में 'भाईचारे' को एक प्रतीकात्मक पात्र के रूप में चित्रित किया गया है। नाटक का भाईचारा कहता है–

"आज अगर मैं मर जाऊँ तो
युद्ध होगा कल से।
आओ भारत देश के वीरो
आ मुझको आजाद करो।
आओ मेरे बंधन तोड़ो
अमन को फिर आबाद करो।"[23]

आज के संदर्भ में देश में फैलने वाले साम्प्रदायिक धार्मिक मूल्य विघटन से उभरी अशांति की ओर ध्यान देने पर हमें सर्वत्र एक बिखराव नजर आता है। कहीं पर धर्म की आड़ में खालिस्तान बनाने पर जोर दिया जाता है तो कहीं पर रामजन्म भूमि और बाबरी मस्जिद के नाम पर हल्ला मचाया जाता है। इस क्रम में जन नाट्य मंच के नुक्कड़ नाटक 'अपहरण भाईचारे का' एक दूसरा अंश प्रस्तुत है–

"एक : जागो, जागो हिन्दुओं, अपनी नींद से
जागो, उठो हिन्दू राष्ट्र का निर्माण करो।
यह देश, यह भारतवर्ष तुम्हारा है।
अपने देश में पहले दर्जे के नागरिक।
के अधिकार को पाने के युद्ध–
घोषणा करो। उठो गर्व से बोलो,
हम हिन्दू हैं और त्रिशूल धारण करो।"[24]

असगर वजाहत के नुक्कड़ नाटक 'मुजरिम कौन है' तथा 'दोनों मारे जाएंगे', ये दोनों धार्मिक संकीर्णताओं पर केन्द्रित है। नाटककार इन नाटकों में धर्म की आड़ में पालने वाली बुराइयों, अधार्मिक वृत्तियों, धार्मिक संकीर्णताओं को उजागर करता है। उनका एक दूसरा नाटक 'सबसे सस्ता गोश्त' में इंसानियत की, मानवीयता की लड़ाई का मोर्चा संभाले दिखाई देता है। नाटक में चित्रित किया गया है कि आज के तथा कथित राजनेता जो न हिन्दू है, न इस्लाम, धर्म के नाम पर देश की भोली भाली जनता को गुमराह करके वोट बटोरने के लिए एक से बढ़कर एक चाल चलाते हैं।

इस नाटक में चित्रित किया गया है कि धर्म के नाम पर आदमियों की हत्या की जाती है, लेकिन उसे भी पुण्य कर्म मानी जाती है। ये लोग गाय या सुअर के गोश्त से तो मंदिर और मस्जिद को अपवित्र मानते हैं लेकिन इंसान की लाश से मंदिर या मस्जिद अपवित्र नहीं बनते हैं, यही उनकी मान्यता हैं। "मंदिर अपवित्र नहीं हुआ.... ये गाय का नहीं ..... आदमी का गोश्त है। नापाक नहीं हुई... ये सूअर का नहीं आदमी का गोश्त है।"25 इसी के माध्यम से नाटककार व्यक्त करना चाहता है कि जहाँ मानवीयता को वरिष्ठता देनी चाहिए वहाँ क्रूरता, बर्बरता, साम्प्रदायिकता दंगा आदि को महत्त्व दिया जाता है।

3. निष्कर्ष :

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि नुक्कड़ रंगकर्मियों ने जनता में व्याप्त साम्प्रदायिकता और धर्मान्धता को जड़ से खत्म करने का आह्वान किया है। उन्होंने दिखाया है कि साम्प्रदायिकता को एक ऐसी विषैली चीज है जो धीरे–धीरे भारत के प्रत्येक भाग में फैलकर एक दिन भारत माता को पूर्ण रूप से नष्ट कर देगी। आज हमारे देश में हर कहीं साम्प्रदायिक दंगे की भीती है। विदेशी ताकतें साम्प्रदायिक दंगे भड़क रही हैं इसी भड़कन को शांति में परिवर्तित करने के लिए नुक्कड़ रंगकर्मियों ने शानदार कार्य किया है।

संदर्भ सूची

1. धारणाद्धर्थ मित्याहुधर्मों धारयते प्रजाः।
   यत्स्याद्धारणां संयुक्त सधर्म इति निश्चय।।
   कर्ण–महभारत, पृ. 69, 58
2. यातोभ्युदयनिः श्रेयस्यिद्धिः स धर्मः।"
   कणाद–वैशेविक दर्शन, पृ. 10,12
3. राणा प्रसाद शर्मा, पौराणिक कोश, पृ. 145
4. डॉ. हरदेव बाहरी, हिन्दी शब्द कोश, पृ. 416
5- Dharma (S.) M. What is to be held or kept, the complex of religious and Social obligation which a devout Hindu is regred to fulfill, right action, duty-meralty. Virtur, Virtouous life, Justice. The Oxford Hindi English Dictionalry, Edied by R.S. MC. Gregor, P. 525
6. डॉ. एन.पी. कुट्टन पिल्लै, पौराणिक सन्दर्भ कोश, पृ. 552
7. संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ, पृ. 549
8. Religion is attitude towards super human powers ogburn and Nimkofg.
   विधाभूषण, डॉ. डी. आर. सचदेव, समाजशास्त्र के सिद्धान्त, पृ. 629
9. Relgioun in a brief in powers superior to man which are be lieved to direct and control the cours of nature and of human life- James Frazer
   विधाभूषण, डॉ. डी. आर. सचदेव, समाजशास्त्र के सिद्धान्त, पृ. 629
10. Religion is a system of belief an symbolic practices an objects gouerned by faith rather than by knowledge, which relates man to ein unseen super natural realm beyond the known an beyond the controlable-Green.
11. संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ, पृ. 549
12. राधाकृष्णन, धर्म और समाज, पृ. 89
13. डॉ. रामनिवास गुप्त, पउमचरिऊ, वस्तुगत एवं शिल्पगत प्रवृत्तियाँ, पृ. 127
14. डॉ. श्याम शर्मा, आधुनिक हिन्दी नाटकों में नायक, पृ. 44
15. वही, पृ. 16–17, पृ. 45
16. वही, पृ. 45
17. वही, पृ. 47
18. छः पैसे का रुपया, नुक्कड़ जन्म संवाद, अंक 16–17, पृ. 81
19. नुक्कड़ नाटक रचना और प्रस्तुति, प्रज्ञा, पृ. 120
20. रमेश उपाध्याय, राजा की रसोई, उत्तरगाथा (जनवरी–अप्रैल), 1982, पृ. 81
21. उत्तरगाथा, साम्प्रदायिकता विरोधी अंक (जनवरी–अप्रैल 1982), पृ. 77
22. सफदर, अपहरण भाईचारे का, उद्धावन जनवरी–मार्च 1987, पृ. 33
23. अपहरण भाईचारे का, जन नाट्य मंच, दिल्ली, उद्धावन जनवरी–माच्र, 1987, पृ. 33
24. सम्पादक सुभाष चौधरी, मुजरिम कौन है?, गलत फैसला, पृ. 78
25. सुरेश वशिष्ठ, गलत फैसला, मुजरिम कौन है?, पृ. 68

RRIJM 2015, All Rights Reserved